8

209sk08

विरहकातरं तपोवनम्

जीवन में वियोग की अवस्था दु:खदायी होती है पर वह और भी अधिक असहनीय हो जाती है जब वह वियोग स्वपालित कन्या से हो। महर्षि कण्व के तपोवन में पली शकुन्तला के पतिगृह जाने पर न केवल उसकी सहेलियाँ, तापसी गौतमी एवं ऋषि कण्व ही दु:खी होते हैं बल्कि आश्रम के पशु, पक्षी, वृक्ष और लताएँ भी शोक से व्याकुल हो उठती हैं। इसका बहुत ही सुन्दर चित्रण महाकवि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किया है जिसका एक संक्षिप्त एवं सरलीकृत रूप इस पाठ में संकलित किया गया है। प्राचीन काल में पशु, पक्षी और वनस्पति जगत् भी परिवार के अंग ही होते थे और वे भी अपना हर्ष और शोक परिवार के एक सदस्य की भाँति व्यक्त करते थे इसका सजीव उदाहरण आप प्रस्तुत पाठ में प्राप्त कर सकेंगे।

उद्देश्यानि

इदं पाठं पठित्वा भवान्/भवती

- पाठे प्रयुक्तपात्राणां चरित्रचित्रणं करिष्यति;
- तपोवनस्य वर्णनं स्ववाक्येषु करिष्यति;
- विशेष्यै: सह विशेषणानां संयोजनं करिष्यति;
- लोट्लकारे प्रयुक्तै: क्रियापदै: वाक्यपूर्तिं करिष्यति;
- पद्यानां भावार्थेषु उपयुक्तपदै: रिक्तस्थानपूर्तिं करिष्यति;
- उपसर्गप्रयोगेण कथं धातूनाम् अर्थेषु परिवर्तनं भवति इति वाक्यप्रयोगमाध्यमेन स्पष्टीकरिष्यति;
- संधियुक्तपदानां संधिच्छेदं करिष्यति।

क्रियाकलापः 8.1

चित्र 8.1

उपरिलिखिते चित्रे किम् अस्ति किम् न अस्ति इति (√) (×) चिह्नेन सूचयत

कमलपुष्पम्	( )	मेघाः	( )
वृक्षाः	( )	प्रासादः	( )
नदी	( )	यज्ञशाला	( )
पुष्पाणि	( )	लताः	( )
पर्वताः	( )	शस्त्राणि	( )
भ्रमराः	( )	सरोवरः	( )
वाहनानि	( )	नौका	( )

8.1 इदानीं मूलपाठं पठामः

प्रथमः एकांशः

(ततः प्रविशति शकुन्तला, सख्यौ, गौतमी च। सख्यौ शकुन्तलायाः पुष्पादिभिः अंगरागादिभिः अभिनयेन शृङ्गारं कुरुतः)

सख्यौ हला शकुन्तले! अवसितमण्डना असि। परिधत्स्व क्षौमयुगलम्। (शकुन्तला उत्थाय परिधत्ते)

(ततः प्रविशति कश्यपः)

गौतमी जाते! एष आनन्दपरिवाहिन्या दृष्ट्या वीक्षमाणः गुरुः उपस्थितः। आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व।

शब्दार्थः
अवसितमण्डना = शृंगार पूरा कर लेने वाली, परिधत्स्व = पहन लो, क्षौमयुगलम् = सिल्क के जोड़े को, उत्थाय = उठकर परिधत्ते = पहनती है, जाते = हे पुत्री, आनन्दपरिवाहिन्या दृष्टया = आनन्द की वर्षा करती हुई दृष्टि या नेत्रों से, वीक्षमाणः

शकुन्तला (सलज्जम्) तात! वन्दे।

कण्वः वत्से! भर्तुः बहुमता भव। सम्राजं सुतम् आप्नुहि।

गौतमी भगवन्! वरः खलु एषः न आशीः।

कण्वः वत्से! इतः अग्निं प्रदक्षिणीकुरुष्व। एते वह्नयः दुरितम् अपघ्नन्तः त्वां पावयन्तु। प्रतिष्ठस्व इदानीम्।

(सदृष्टिक्षेपम्) क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः।

(शार्ङ्गरवः अन्ये च शिष्याः प्रविशन्ति।)

शिष्याः भगवन्! इमे स्मः।

शार्ङ्गरवः इत इतो भवती।

(सर्वे परिक्रामन्ति)

कण्वः भो। भोः! तपोवनतरवः! या शकुन्तला युष्मासु अपीतेषु जलं न पीतवती, प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन पल्लवानि न आदत्तवती सा एव इयं पतिगृहं याति। सर्वैः अनुज्ञायताम्।

द्वितीयः एकांशः

(कोकिलरवं सूचयित्वा)

कण्वः कोकिलस्वरेण वृक्षैः अनुमतिः प्रदत्ता।

शकुन्तला आश्रमपदं परित्यजन्त्याः मे चरणौ दुःखेन पुरतः प्रवर्तेते।

प्रियंवदा न केवलं तपोवनविरहकातरा सखी एव। त्वया उपस्थितवियोगस्य तपोवनस्य अपि तावत् समवस्था दृश्यते।

पश्य

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः, परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपाण्डुपत्रा, मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।

शकुन्तला तात! लताभगिनीं वनज्योत्स्नाम् आमन्त्रयिष्ये। वनज्योत्स्ने! प्रत्यालिङ्ग मां शाखाबाहुभिः। अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी भविष्यामि। हला अनसूये! एषा द्वयोर्युवयोः ननु हस्ते निक्षिप्ता।

सख्यौ अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः?

कण्वः अनसूये! अलं रुदित्वा। ननु भवतीभ्याम् एव स्थिरीकर्तव्या शकुन्तला।

शकुन्तला (गतिभङ्गं रूपयित्वा) (आत्मगतम्) को नु खल्वेष मे वस्त्रे सज्जते?

कण्वः अयं ते पुत्र इव वर्धितः मृगः।

शकुन्तला वत्स! इदानीं मया विरहितं त्वां तातः चिन्तयिष्यति। निवर्तस्व तावत् (रुदती प्रस्थानं करोति)

टिप्पणी

= देखते हुए, प्रतिपद्यस्व = पालन करो, बहुमता = सम्मानिता, आप्नुहि = प्राप्त प्रदक्षिणीकुरु = प्रदक्षिणा करो, वह्नयः = अग्नियाँ, दुरितम् = पाप को, अपघ्नन्तः = नष्ट करते हुए, पावयन्तु = पवित्र करें, प्रतिष्ठस्व = चलो, प्रस्थान करो, इमे = ये, स्मः = हम हैं, इतः = इधर से, परिक्रामन्ति = घूमते हैं, तपोवनतरवः = तपोवन के वृक्ष, युष्मासु अपीतेषु = तुम्हारे बिना पीये, न पीतवती = नहीं पीती थी, प्रियमण्डनापि = आभूषण के बहुत प्रिय होने पर भी, भवतां = आपके, पल्लवानि = किसलयों को,

न आदत्तवती = नहीं ग्रहण करती थी, अनुज्ञायताम् = अनुमति दी जाए, कोकिलरवं = कोयल की ध्वनि को, सूचयित्वा = सूचित करके, परित्यजन्त्याः = छोड़ते हुए, मे = मेरे, दुःखेन = कष्ट से, पुरतः = आगे की ओर, तपोवनविरहकातरा = तपोवन के विरह से व्याकुल, उपस्थितवियोगस्य = उपस्थित वियोग वाले, समवस्था = समान अवस्था दृश्यते = दिखाई दे रही है, मृग्यः = हरिणियाँ, उद्गलितदर्भकवलाः = घास खाना छोड़ दिया है जिन्होंने वे, परित्यक्तनर्तनाः = नाचना छोड़ दिया है जिन्होंने वे, अपसृतपाण्डुपत्राः = पीले पत्तों को छोड़ती हुई, लताः = बेलें, लताएँ, अश्रूणि = आँसू, मुञ्चन्ति = बहा रही हैं (छोड़ रही हैं), आमन्त्रयिष्ये = विदा लूंगी, प्रत्यालिङ्ग = आलिंगन करो, अद्य प्रभृति = आज से, दूरपरिवर्तिनी = दूर बसने वाली, परदेशवासिनी, द्वयोः युवयो = तुम दोनों के, निक्षिप्ता = सौंप दी गई है, कस्य हस्ते = किसके हाथ में, समर्पितः = सौंप दिया गया है, अलं रुदित्वा = रोओ मत, भवतीभ्याम् = तुम दोनों के द्वारा, स्थिरीकर्तव्या = हिम्मत बंधानी है, गतिभङ्गं रूपयित्वा = चलते हुए रुकावट का अभिनय करके, सज्जते = पकड़ रहा है (अटक

टिप्पणी

रहा है), ते = तुम्हारा, वर्धितः = पाला हुआ, मृगः = हरिण, विरहितं = वियुक्त, चिन्तयिष्यति = परवाह करेंगे, ध्यान रखेंगे, निवर्तय = लौटा दो, भेज दो, रुदती = रोती हुई, अलं रुदितेन = रोओ मत, स्थिरा = दृढ़, आलोकय = देखो, नतोन्नतमार्गे = ऊंचे नीचे रास्ते पर, पदानि = पैर, विषमीभवन्ति = टेढ़े पड़ रहे हैं, आ उदकान्तम् = पानी के किनारे तक, स्निग्ध : = प्रिय, स्नेही, अनुगन्तव्यः = पीछे जाना चाहिए, सन्दिश्य = सन्देश देकर, प्रतिगन्तुमर्हति = वापस लौट सकते हैं, गुरून् = बड़ों की, शुश्रूषस्व = सेवा करो, परिजनेषु = सेवकों पर, बाहुल्येन = बहुत अधिकता से, उदारा = उदार, समृद्धिषु = समृद्धियों में, अगर्विता = अभिमान से रहित, गृहिणीपदं = गृहिणी के पद को, यान्ति = प्राप्त करती हैं, अवधारय = धारण कर लो, देशान्तरे = दूसरे देश में, उन्मूलिता = उखड़ी हुई, धारयिष्यामि = धारण करूँगी, परिहीयते = बीत रही है, उपरुध्यते = रुक रहा है, अनुष्ठानं = धार्मिक कृत्य, यत् = जो, इच्छामि = चाहता हूँ, तत् = वह, ते = तुम्हारे लिए, अस्तु = हो जाए, पन्थानः = रास्ते, शिवाः = मङ्गलमय।

तृतीय : एकांशः

कण्वः वत्से! अलं रुदितेन। स्थिरा भव। इतः पन्थानम् आलोकय। अस्मिन् नतोन्नतमार्गे ते पदानि विषमीभवन्ति।

शार्ङ्गरवः भगवन्! ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्, अत्र सन्दिश्य प्रतिगन्तुमर्हति भवान्।

कण्वः शकुन्तले! त्वं गुरून् शुश्रूषस्व, परिजनेषु बाहुल्येन उदारा भव। समृद्धिषु अगर्विता भव। एवं आचरन्त्यः युवतयः गृहिणीपदं यान्ति।

गौतमी जाते! एतत् खलु सर्वम् अवधारय।

शकुन्तला तात! कथम् उन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि। (पादयोः पतति)

गौतमी जाते! परिहीयते गमनवेला। निवर्तय पितरम्।

कण्वः वत्से! उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्।

शकुन्तला तात! मा अतिमात्रं मम कृते उत्कण्ठस्व। (रोदिति)

कण्वः यदिच्छामि ते तदस्तु। गच्छ! शिवास्ते सन्तु पन्थानः। (सर्वे निष्क्रान्ताः)

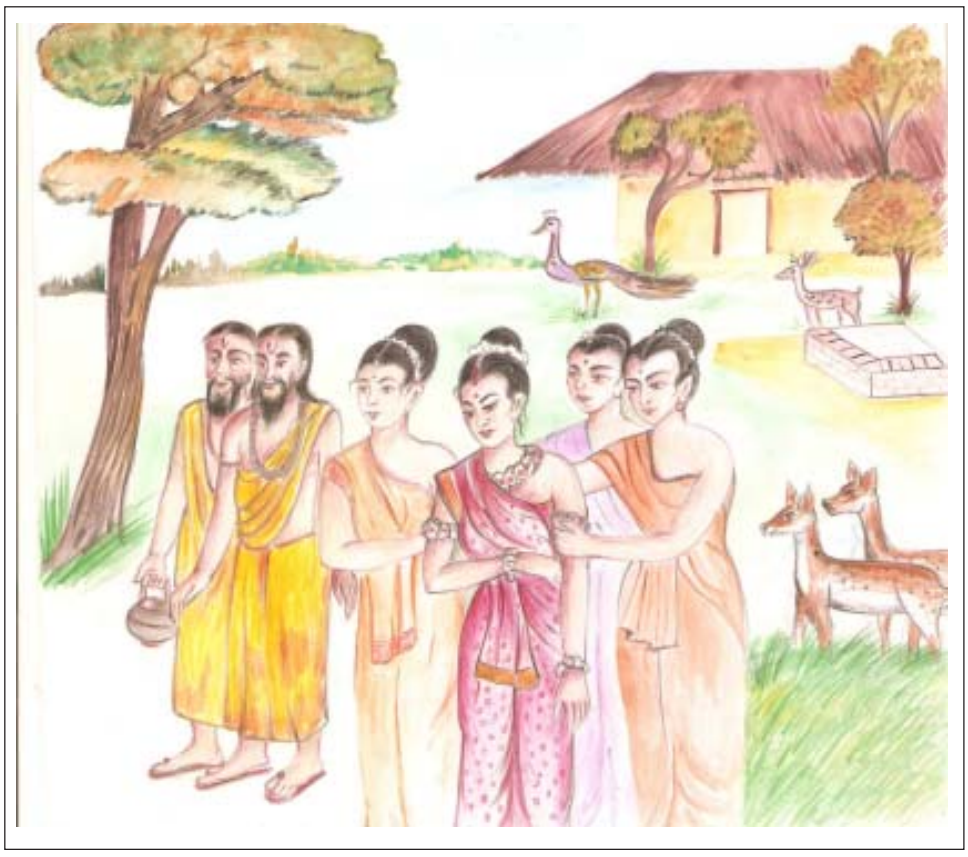

चित्र 8.2 : शकुन्तला को पतिगृह के लिए विदा करते हुए भावुक मुद्रा में महर्षि कण्व, सखियां तथा आश्रम के पशु, पक्षी, वृक्ष और लताएं।

टिप्पणी

बोधप्रश्नाः

1. रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत–

   (i) हला शकुन्तले! परिधत्स्व .....।

   (ii) वत्से! इतः अग्निं .....।

   (iii) सा एव इयं पतिगृहं .....। सर्वैः .....।

   (iv) हला अनसूये! एषा द्वयोर्युवयोः ननु हस्ते .....।

   (v) वत्से! अलं .....। स्थिरा .....। इतः पन्थानम् .....।

2. कः कम् कथयति?

	यथा	कः	कम्
(i)	सम्राजं सुतम् आप्नुहि।	कण्वः	शकुन्तलाम्
(ii)	भगवन्! इमे स्मः	.....	.....
(iii)	तात! लताभगिनीं वनज्योत्स्नाम् आमन्त्रयिष्ये	.....	.....
(iv)	को नु खल्वेष मे वस्त्रे सज्जते?	.....	.....
(v)	निवर्तस्व तावत्।	.....	.....
(vi)	जाते! एतत् सर्वमवधारय।	.....	.....
(vii)	तात! मा अतिमात्रं मम कृते उत्कण्ठस्व।	.....	.....

8.2 अधुना पाठम् अवगच्छामः

8.2.1 प्रथमः एकांशः

ततः प्रविशति ..... अनुज्ञायताम्।

व्याख्या

सख्यौ– अनसूया और प्रियवंदा शकुन्तला की दो सखियाँ हैं। वे दोनों शकुन्तला के पतिगृह जाने की तैयारी करते हुए शकुन्तला का शृङ्गार करती हैं।

टिप्पणी

अवसितमण्डना– शकुन्तला जिसकी शृंगार क्रिया समाप्त हो चुकी है। समाप्त शृङ्गार क्रिया वाली

परिधत्स्व– पहनो, सखियाँ शकुन्तला को रेशमी दुपट्टा ओढ़ने के लिए कहती हैं।

आनन्दपरिवाहिन्या दृष्ट्या – आनन्द की वर्षा करती हुई दृष्टि से, कण्व अपनी पुत्री को वात्सल्य रस से परिपूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं।

तात! वन्दे–शकुन्तला ऋषि कण्व को प्रणाम करती है। यही भारतीय सभ्यता का आदर्श है।

कण्व शकुन्तला को विदा करने के लिए आते हैं। गौतमी शकुन्तला को शिष्टाचार का पालन करने के लिए कहती हैं। कण्व शकुन्तला को आशीर्वाद देते हैं कि वह पति से सम्मान प्राप्त करे और उसका पुत्र सम्राट् हो। गौतमी इसे आशीर्वाद न मान कर वरदान स्वरूप ही मानती है। कण्व मुनि शकुन्तला को यज्ञ की अग्नि की परिक्रमा करने के लिए कहते हैं। प्राचीन काल में यज्ञ की अग्नि 24 घंटे प्रज्वलित रहती थी। कण्व ऋषि प्रार्थना करते हैं कि पापों का नाश करने वाली अग्नियाँ शकुन्तला को कष्टों से बचाएँ और उसे पवित्र करें।

युष्मासु अपीतेषु– कण्व वृक्षों से शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति देने की प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि यह वही शकुन्तला है जो तुम्हें सींचे बिना पानी भी नहीं पीती थी। आभूषणों के प्रिय होने पर भी वह तुम्हारे प्रति स्नेह के कारण तुम्हारे किसलयों को भी नहीं तोड़ती थी। वही शकुन्तला आज पतिगृह जा रही है। कृपया आप उसे अनुमति दें। (– मूल में यह भाव पद्य में दिया गया है। यहाँ सरल करके गद्य में संक्षेप में दिया जा रहा है।)

व्याकरणबिन्दवः

शकुन्तले! 'शकुन्तला' से शकुन्तले! स्त्री लि. सम्बोधन में प्रथमा एकव., इसी प्रकार जाता (पुत्री) से जाते!, वत्सा से वत्से! इत्यादि सम्बोधन में प्रयुक्त पद हैं।

अवसितमण्डना– अवसितं मण्डनं यस्याः सा, बहुव्रीहि समास, स्त्री लि. प्रथमा एकव. जिसकी शृंगार क्रिया समाप्त हो गयी है, वह शकुन्तला

परिधत्स्व – परि + धा, लोट्लकार पु., एकव., (आत्मनेपद) पहन लो।

प्रदक्षिणीकुरुष्व – प्रदक्षिण + च्वि + कृ लोट् लकार पु., एकवचन, आत्मनेपद, प्रदक्षिणा करो।

प्रतिष्ठस्व – प्र+स्था, लोट्लकार पु., एकवचन, चलो प्रस्थान करो। (आत्मनेपद)

भव – भू लोट्लकार, पु., एकव., परस्मैपद, बनो।

आप्नुहि – आप्, लोट्लकार, पु., एकव. प्राप्त करो।

पावयन्तु – पूञ्, प्रेरणार्थक लोट् प्रथम पु., बहुव., पवित्र करें।

अनुज्ञायताम् – अनु + ज्ञा, कर्मवाच्य, लोट् प्रथम पु., एकव., अनुमति दी जाय।

ल्यप् *प्रत्यय*

टिप्पणी

उत्थाय-उत् + स्था + ल्यप्, अव्ययपद उठकर।

क्त *प्रत्यय का प्रयोग*

अवसित अव + सो-सा + कर्मवाच्य में क्त प्रत्यय नपुं. प्रथमा एकव., समाप्त

बहुमता बहु + मन् + कर्ता अर्थ में क्त, स्त्रीलि. प्रथमा एकव. सम्मानित

शानच् शतृ प्रत्यय का प्रयोग

वीक्षमाणः वि + ईक्ष् + शानच्, पुं. प्रथमा, एकव., देखते हुए।

ईक्ष् धातु आत्मनेपदी है अतः शानच् का प्रयोग है।

अपघ्नन्तः अप + हन् + शतृ, पु. प्रथमा बहुव., नष्ट करती हुई (अग्नियाँ)

क्तवतु का प्रयोग

पीतवती पा + क्तवतु, स्त्री. प्रथमा एकव., पीती थी।

आदत्तवती आ + दा + क्तवतु, स्त्री. प्रथमा एकवचन, ग्रहण करती थी।

कर्मवाच्य का प्रयोग

सर्वैः अनुज्ञायताम् – वाक्य रचना कर्मवाच्य में है। इसका कर्तृवाच्य में रूप होगा – 'सर्वे अनुजानन्तु', सभी अनुमति दें।

पाठगतप्रश्ना : 8.1

संस्कृतेन उत्तरत

1. (i) के शकुन्तलायाः सख्यौ?

.....

(ii) शकुन्तला कं प्रणमति?

.....

(iii) 'सम्राजं सुतम् अवाप्नुहि' इति कः काम् कथयति?

.....

(iv) 'दत्तवती' इति शब्दस्य विलोमपदं किम्?

.....

(v) 'इमे स्मः' इति के कथयन्ति?

.....

टिप्पणी

2. वाक्येषु क्रियापदानि योजयत

(i) सख्यौ शकुन्तलायाः शृङ्गारं .....।

(ii) शकुन्तले! क्षौमयुगलं .....।

(iii) वत्से! इतः अग्निं .....।

(iv) सा एव इयं पतिगृहं .....।

(v) शार्ङ्गरवः अन्ये च शिष्याः .....।

3. विशेष्यैः सह विशेषणानि योजयत

विशेषणानि	विशेष्यपदानि
क. अवसितमण्डना	1. सुतम्
ख. सम्राजं	2. गुरुः
ग. दुरितम् अपघ्नन्तः	3. दृष्ट्या
घ. वीक्षमाणः	4. शकुन्तला
ङ. आनन्दपरिवाहिन्या	5. वह्नयः

8.2.2 द्वितीयः एकांशः

कोकिलरवं सूचयित्वा ..... रुदती प्रस्थानं करोति

व्याख्या

कोकिलस्वरेण वृक्षों ने कोयल की ध्वनि के माध्यम से शकुन्तला को पति के घर जाने की मानो अनुमति दे दी। इस अंश में कवि का प्रकृति प्रेम द्रष्टव्य है।

दुःखेन पुरतः प्रवर्तेते– शकुन्तला आश्रम को छोड़ते हुए दुःखी हो रही है, उसके चरण बड़ी कठिनाई से कष्ट के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

समवस्था– इधर शकुन्तला अपना घर छोड़ने पर व्याकुल हो रही है उधर तपोवन की भी वही अवस्था है। वह भी उसके वियोग में व्याकुल है।

उद्गलित....।

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः, परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा, मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।

टिप्पणी

अन्वय

मृग्यः उद्गलितदर्भकवलाः, मयूराः परित्यक्तनर्तनाः, अपसृतपाण्डुपत्राः लताः अश्रूणि मुञ्चन्ति इव।

शकुन्तला के वियोग में हरिणियों ने घास का निवाला भी उगल दिया है, उनसे घास भी नहीं खाई जा रही है, मोरों ने नाचना छोड़ दिया है, लताएँ पीले पत्तों को गिराती हुई मानो आंसू बहा रही हैं।

व्याकरणबिन्दवः

आमन्त्रयिष्ये– आ + मन्त्र, लृट्लकार उ.पु., एकव, आत्मनेपद, विदा लूँगी, मन्त्र् धातु से पहले आ उपसर्ग लगने पर उसका अर्थ विदा लेना, अनुमति लेना हो जाता है।

वस्त्रे सज्जते– वस्त्र, नपुं., सप्तमी एकव., सज्जते-सज्ज् लट्लकार प्र. पु., एकव. आत्मने-पद शकुन्तला द्वारा पालित पुत्रसम हरिण शावक (बच्चा) शकुन्तला के दुपट्टे को पीछे से पकड़ लेता है। शकुन्तला पूछती है कि यह कौन उसके वस्त्र में अटक रहा है।

निवर्तस्व– नि उपसर्ग+वृत् लोट्लकार, म.पु. एकव. आत्मने पद, वापस लौट जाओ। शकुन्तला हरिण के बच्चे को कहती है कि अब पिता कण्व ही उसकी रक्षा करेंगे। वह उसे लौट जाने को कहती है।

सूचयित्वा – सूच् + णिच् + क्त्वा सूचित कर के। (अव्यय)

परित्यजन्त्याः – परि + त्यज् + शतृ, स्त्री. षष्ठी एकव., 'मे' का विशेषण, छोड़ते हुए (मेरे)

उद्गलितदर्भकवलाः – दर्भस्य कवलः, (षष्ठीतत्पुरुष) याभिः ताः, बहुव्रीहिसमास,, स्त्रीलिङ्ग प्रथमा बहुव. समास जिनके द्वारा घास का ग्रास भी उगल दिया गया है, वे हरिणियाँ। ध्यान दीजिए संस्कृत में– उद्गलित, हिंदी में–उगल दिया।

मृग्यः – मृगी-स्त्रीलि. प्रथमा बहुव., हरिणियों ने।

परित्यक्तनर्तनाः – परित्यक्तं नर्तनं यैः ते बहुबव्रीहिसमास पुं. प्रथमा बहुव. – वे मोर जिन्होंने नाचना छोड़ दिया है।

अपसृतपाण्डुपत्राः – अपसृतानि पाण्डुपत्राणि याभिः ताः बहुव्रीहिसमास स्त्रीलि. प्रथमा बहुव. लताः का विशेषण जिनके द्वारा पीले पत्ते गिरा दिये गये हैं, गिरे हुए पीले पत्तों वाली लताएँ

अद्यप्रभृति – अव्यय है, आज से लेकर।

दूरपरिवर्तिनी	–	दूरं परिवर्तते या सा, विशेषण है। दूर देश में रहने वाली।
अलं रुदित्वा	–	रुद् + (इ) त्वा, रुद् अलं के साथ क्त्वा प्रत्ययान्त का प्रयोग निषेध के अर्थ में होता है, रोना बंद करो, मत रोओ।
सज्जते	–	सज्ज्, लट् पु. प्र. ए.वचन, अटक रहा है।
निवर्तस्व	–	नि + वृत्, लोट् म. पु. एकव., लौट जाओ।

पाठगतप्रश्ना: 8.2

1. अधोलिखितवाक्येषु अव्ययपदानि पूरयत

(i) मे चरणौ दु:खेन .... प्रवर्तेते।

(ii) तपोवनस्य .... तावत् समवस्था दृश्यते।

(iii) लता: अश्रूणि .... मुञ्चन्ति।

(iv) .... दूरपरिवर्तिनी भविष्यामि।

(v) ननु भवतीभ्याम् .... स्थिरीकर्तव्या शकुन्तला।

2. कर्तृवाच्ये परिवर्तनं कुरुत

(i) तपोवनस्य समवस्था दृश्यते।

....

(ii) एषा युवयो: हस्ते निक्षिप्ता।

....

(iii) अयं जन: कस्य हस्ते समर्पित:?

....

(iv) भवतीभ्याम् एव स्थिरीकर्तव्या शकुन्तला।

....

(v) वृक्षै: कोकिलस्वरेण अनुमति: प्रदत्ता।

....

टिप्पणी

3. **अधोरेखङ्कितानि सर्वनामपदानि कस्य स्थाने प्रयुक्तानि?**

(i) चरणौ मे दु:खेन पुरत: प्रवर्तेते। .....

(ii) एषा युवयो: हस्ते निक्षिप्ता। .....

(iii) क: नु खलु एष: मे वस्त्रे सज्जते। .....

(iv) अयं ते पुत्र इव वर्धित: मृग:। .....

(v) त्वां तात: चिन्तयिष्यति। .....

8.2.3 तृतीय: एकांश:

वत्से! अलं ..... पन्थान: (सर्वेनिष्क्रान्ता:)।

अलं रुदितेन

ऊपर अलं का प्रयोग क्त्वा प्रत्ययान्त के साथ हुआ है। यहाँ पर उसी अव्यय अलं का प्रयोग 'क्त' प्रत्ययान्त के साथ किया गया है। अलं के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग भी होता है। अर्थ वही है, रोओ मत।

अस्मिन् ..... विषमीभवन्ति।

शकुन्तला की आंखों में आंसू भरे हैं। उसे रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा है। ऋषि कण्व उसे ध्यान से चलने को कहते हैं क्योंकि मार्ग ऊंचा नीचा है। वे कहते हैं– मार्ग को ध्यान से देखो; तुम्हारे पैर टेढ़े मेढ़े पड़ रहे हैं।

ओदकान्तम्।

आ+उदकान्तम्। उदक का अर्थ है पानी। परम्परा से यह प्रथा चली आ रही है कि लड़की वाले किसी पानी वाले स्थान तक आकर लड़की को विदाकर वापस लौट जाते हैं। अत: शार्ङ्गरव, ऋषि कण्व को सरोवर के पास तक आकर अब शकुन्तला को उपदेश देकर वापस लौट जाने के लिए प्रार्थना करते हैं।

परिजनेषु ..... भव।

कण्व शकुन्तला को पति के घर जाते समय उपदेश देते हैं कि वहाँ बड़ों की सेवा करना, सेवकों के प्रति उदारता से व्यवहार करना, समृद्धि आने पर अहंकार मत करना। यही वह मार्ग है जिस पर चल कर युवतियाँ गृहिणीपद को प्राप्त करती हैं। यह उपदेश आज भी प्रत्येक कन्या के लिए उतना ही सार्थक है जितना तब था।

टिप्पणी

शकुन्तला कण्व के चरण स्पर्श करके कहना चाहती है कि वह उखाड़ी गई चंदन लता के समान परदेश में कैसे जीवित रह सकेगी?

उपरुध्यते–कण्व कहते हैं कि उनके तपस्या के अन्य अनुष्ठानों, संध्या आदि नित्यकर्म करने में रुकावट हो रही है।

यदिच्छामि–कण्व कहते हैं कि जो मैं चाहता हूँ वह तुम्हें प्राप्त हो।

शिवास्ते–यह वाक्य प्रायः विदा के समय कहा जाता है। तुम्हारे मार्ग कल्याणकारी हों।

व्याकरणबिन्दवः

(i) 'अलम्' अव्यय के योग में तृतीया का प्रयोग किया जाता है अलं रुदितेन, अलं कोलाहलेन।

(ii) आलोकय – आ + लोक् + लोट्लकार, मध्यम पुरुष एकवचन, देखो।

आलोक्य – आ + लोक + ल्यप् अव्यय, इसका अर्थ होता है देख कर। आलोकय और आलोक्य में अंतर को समझिए।

सन्दिश्य – सम्दिश् + ल्यप्, अव्यय, संदेश देकर

(iii) आज्ञाकाल (लोट् लकार) की क्रियाएँ देखिए और समझिए–

शुश्रूषस्व – श्रु + सन् = शुश्रूष + लोट्लकार म. पु., एकव., सेवा करो।

अवधारय – अव + धृ (णिच्) लोट्, मध्यम पु. एकवचन, धारण करो।

उत्कण्ठस्व – उत् उपसर्ग, कण्ठ् + लोट्, म पु. एकव., चिन्ता करना। 'हमारी चिन्ता मत करना'

गच्छ – गम् + लोट्, मध्यम पु., एकव., जाओ

अस्तु – अस् + लोट्, प्रथम पु., एकव., होवे।

सन्तु (–) अस् + लोट्, प्र. पु., बहुव. होवें।

(अस् धातु के लोट् लकार के रूप योग्यता विस्तार में देखें)

पाठगतप्रश्नाः 8.3

1. अधोलिखितेषु यानि क्रियापदानि लोट् लकारे सन्ति, तानि रेखाङ्कितानि कुरुत

आलोकय, आलोक्य, अवधारय, अवधार्य, शुश्रूषस्व, अनुगन्तव्यः, सन्दिश्य, निवर्तय, निवर्त्य, उत्कण्ठस्व, उत्कण्ठा, सन्तु।

टिप्पणी

2. अधोलिखितवाक्येषु कर्तृपदानि योजयत

(i) ..... गुरुन् शुश्रूषस्व।

(ii) परिहीयते ..... ।

(iii) एवम् ..... गृहिणीपदं यान्ति।

(iv) शिवाः ते ..... सन्तु।

3. अधोलिखितक्रियापदानां कानि विलोमपदानि पाठे प्रयुक्तानि?

आयान्ति, समीभवन्ति, वर्धते, आमन्त्रय, उत्पतति।

....

4. अधोलिखितानां वर्णानां संश्लेषणं कुरुत–

(i) त् व् + अ + म् =

(ii) श् र् उ् + य् + अ् + त् + ए =

(iii) ग् + अ + च् + छ् + अ =

(iv) व् + अ + त् + स् + ए =

(v) स् + अ + म् + ऋ + द् ध् इ + षु =

किमधिगतम्?

1. प्रकृतिः अस्माकं जीवनस्य महत्त्वपूर्णम् अङ्गम् अस्ति।

2. जीवने यः नरः सदाचारस्य पालनं करोति सः आशीर्वादं लभते।

3. नाटके प्रयुक्तानां पात्राणां जीवनं कथं तपोमयम् आसीत्, तथैव अस्माभिः अपि जीवने गुणाः धारयितव्याः।

4. लोट्लकारस्य रूपेषु आत्मनेपदे परस्मैपदे भेदः भवति।

5. वाक्येषु कर्तृवाच्येषु क्रियायाः अन्वितिः कर्त्रा सह भवति कर्ता प्रथमायां विभक्तौ, कर्मवाच्येषु च कर्म प्रथमायां विभक्तौ भवति।

6. 'अलम्' अव्ययेन सह 'क्त्वा' प्रत्ययान्तस्य, तृतीयान्तस्य वा पदस्य प्रयोगः भवति।

टिप्पणी

योग्यताविस्तारः

1. लेखकपरिचयः– प्रस्तुत पाठ के लेखक महाकवि कालिदास लौकिक संस्कृत साहित्य में ही नहीं पूरे विश्व में अद्वितीय कवि हैं। उनके रघुवंशम् तथा कुमारसम्भवम् ये दोनों अत्यन्त प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। इनकी मेघदूतम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् आदि रचनाएँ तो प्रसिद्ध हैं ही उन सबमें अभिज्ञनिशाकुन्तलम् नाटक सर्वाधिक प्रसिद्ध है। प्रस्तुत पाठ सुप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक का संक्षिप्त और सरल रूपान्तर है। कुछ कठिन पद्यों से सरल अंश ही संगृहीत किये गये हैं जिससे छात्रों को उपर्युक्त नाटक को पूर्ण रूप से पढ़ने की प्रेरणा मिले।

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की कथा का मूल आधार महाभारत में मिलता है।

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के विषय में कहा गया है कि

काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्र रम्या शकुन्तला,
तत्रापि चतुर्थोऽङ्कः, तत्र श्लोकचतुष्टयम्।

काव्यों में नाटक सर्वाधिक रम्य होता है। सभी नाटकों में 'शाकुन्तलम्' नाटक सबसे अधिक सुंदर है। उसमें भी चौथा अंक प्रशंसनीय है, और चौथे अंक में भी चार श्लोक तो सर्वोत्तम हैं। ये चार श्लोक इस प्रकार हैं–

(1) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया।
कण्ठस्स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमहो स्नेहादरण्यौकसः।
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

(2) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं, युष्मास्वपीतेषु या।
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः।
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं, सर्वैरनुज्ञायताम्।।

(3) अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलञ्चात्मनः।
त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिञ्च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया।
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः।।

(4) शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने,
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी,
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामा कुलस्याधयः।।

टिप्पणी

(I) अभिवादन का महत्त्व

भारतीय संस्कृति में विनय, अभिवादन और सदाचार का बहुत महत्त्व है। कहा गया है–

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्यायशोबलम्।।

जो व्यक्ति अपने से बड़ों का आदर सम्मान तथा अभिवादन करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल सभी वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

(II) बाद में इसी शकुन्तला का पुत्र भरत हुआ जिसके नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। उससे पहले इसका नाम अजनाभ था।

भाषा विस्तारः

(I) लोट् लकार में आत्मनेपद और परस्मैपद में अंतर समझिये–

कृ धातु के रूप परस्मैपद एवं आत्मनेपद दोनों में चलते हैं।

कृ धातु लोट् लकार परस्मैपदे

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमः पुरुषः	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यमः पुरुषः	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तमः पुरुषः	करवाणि	करवाव	करवाम

कृ धातु लोट् लकार आत्मनेपद

प्रथम पु.	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यम पु.	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम पु.	करवै	करवावहै	करवामहै

(II) कृधातु के लट्लकार में परस्मैपद एवं आत्मने पद में अन्तर समझाइए–

कृ लट् परस्मैपद

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमः पुरुषः	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यमः पुरुषः	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तमः पुरुषः	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

कृ लट् आत्मनेपद

प्रथमः पुरुषः	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यमः पुरुषः	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तमः पुरुषः	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

(ii) इस पाठ में प्रयुक्त 'क्त' प्रत्ययान्त पद अधोलिखित हैं–

अवसिता, उपस्थितः, बहुमता, अपीतेषु, उद्गलितम्, परित्यक्तम्, अपसृतम्, निक्षिप्ता, समर्पितः, वर्धितः, रुदितेन, नतः-उन्नतः, उन्मूलिता, निष्क्रान्ताः।

(iii) क्तवतु प्रत्यय इन पदों में प्रयुक्त है–

पीतवती, आदत्तवती, ये स्त्रीलिंग में रूप हैं। पुल्लिंग में इनके स्थान पर रूप होगा– पीतवान् आदत्तवान्। नपुंसकलिंग में इसके स्थान पर रूप होगा– पीतवत्, आदत्तवत् इत्यादि।

पाठान्तप्रश्नाः

1. निम्नलिखितानि वाक्यानि यथानिर्देशं परिवर्तनीयानि

यथा (i) एते वह्नयः त्वां पावयन्तु। (एकवचने)

एषः वह्निः त्वां पावयतु।

(ii) भगवन्! इमे स्मः। (एकवचने)

.....

(iii) सा इयं पतिगृहं याति। (बहुवचने)

.....

(iv) कः नु खलु एषः मे वस्त्रे सज्जते। (द्विवचने)

.....

(v) इतः पन्थानं आलोकय। (द्विवचने)

.....

2. सम्बोधनपदानि योजयत

(i) गौतमी .....! एतत् खलु सर्वमवधारय।

टिप्पणी

(ii) .....! मा अतिमात्रं मम कृते उत्कण्ठस्व।

(iii) .....! भर्तुः बहुमता भव।

(iv) .....! वरः खलु एषः न आशीः।

(v) .....! या शकुन्तला युष्मासु अपीतेषु जलं न पीतवती, सा इयं पतिगृहं याति।

3. भिन्नपदं रेखाङ्कितं कुरुत–

ल्यप् प्रत्ययः कस्मिन् पदे अस्ति–

(i) मृग्यः, उत्थाय, कर्तव्यम्, आलोकय

तृतीयाविभक्तिः कस्मिन् पदे अस्ति–

(ii) अवसितमण्डना, मया, उन्मूलिता, प्रदत्ता।

उत्तराणि

बोधप्रश्नाः

1. (i) क्षौमयुगलम् (ii) प्रदक्षिणीकुरुष्व, (iii) याति, अनुज्ञायताम्, (iv) निक्षिप्ता, (v) रुदितेन, भव, आलोकय

2.

(i)	कश्यपः	शकुन्तलाम्
(ii)	शिष्याः	कण्वम्
(iii)	शकुन्तला	कण्वम्
(iv)	शकुन्तला	आत्मगतम्
(v)	शकुन्तला	मृगशावकम्
(vi)	गौतमी	शकुन्तलाम्
(vii)	शकुन्तला	कण्वम्

पाठगतप्रश्नाः 8.1

1. (i) अनसूया प्रियवंदा च, (ii) कण्वम्, (iii) कण्वः शकुन्तलाम्, (iv) आदत्तवती, (v) शार्ङ्गरवादयः।

टिप्पणी

2. (i) कुरुतः, (ii) परिधत्स्व, (iii) प्रदक्षिणीकुरुष्व, (iv) याति, (v) प्रविशन्ति।

3. क + 4, ख + 1, ग + 5, घ + 2, ङ + 3

पाठगतप्रश्नाः 8.2

1. (i) पुरतः, (ii) अपि, (iii) इव, (iv) अद्यप्रभृति, (v) एव

2. (i) तपोवनस्य समवस्थां पश्यामः, (ii) एतां युवयोः हस्ते निक्षिप्तवती, (iii) भवती इमं जनं कस्य हस्ते समर्पितवती, (iv) भवत्यौ एव शकुन्तलां स्थिरीकुरुताम्, (v) वृक्षाः कोकिलस्वरेण अनुमतिं प्रदत्तवन्तः।

3. (i) शकुन्तलायाः, कृते (ii) अनसूयाप्रियंवदयोः, कृते (iii) मृगशावकाय, (iv) शकुन्तलायै कृते, (v) मृगशावकाय

पाठगतप्रश्नाः 8.3

1. लोट्लकारे क्रियापदानि

   आलोकय, अवधारय, शुश्रूषस्व, निवर्तय, उत्कण्ठस्व, सन्तु

2. (i) त्वम्, (ii) गमनवेला, (iii) युवतयः, (iv) पन्थानः।

3. (i) यान्ति, (ii) विषमीभवन्ति, (iii) परिहीयते, (iv) निवर्तय, (v) पतति।

4. (i) त्वम्, (ii) श्रूयते, (iii) गच्छ, (iv) वत्से, (v) समृद्धिषु

पाठान्तप्रश्नाः

1. (ii) भगवन् अयम् अस्मि, (iii) ताः इमाः पतिगृहं यान्ति, (iv) कौ नु खलु एतौ मे वस्त्रे सज्जेते, (v) इतः पन्थानम् आलोकयतम्।

2. (i) शकुन्तले, (ii) तात, (iii) वत्से, (iv) भगवन्, (v) भो! भोः! तपोवनतरवः।

3. (i) उत्थाय, (ii) मया।